अभिव्यक्ति

राजभाषा विभाग,
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
रायपुर मंडल
अंक : 24, वर्ष : 2024

मार्गदर्शक	मुख्य संपादक	संपादक	उप संपादक
संजीव कुमार मंडल रेल प्रबंधक	आशीष मिश्रा अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	निकेश कुमार पाण्डेय राजभाषा अधिकारी	मनोज कुमार साहू वरिष्ठ अनुवादक

रफ़्तार रेल की

भारतीय रेलवे की स्थापना **16 अप्रैल, 1853** को हुई थी। 170 वर्षों के सफर के दौरान इसके कदम केवल आगे ही नहीं बढ़े बल्कि रफ़्तार ऐसी पकड़ी कि आज यह भारत के लिए प्रगति का चक्र बन चुकी है। रेल का दुर्गम एवं दूरस्थ प्रदेशों तक विस्तार तरक्की का मानक माना जाने लगा है। किसने सोचा था कि पहली बार मुंबई के बोरीबंदर से ठाणे के बीच मात्र **34 किलोमीटर** की दूरी तय करने वाली हमारी रेलवे दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क बन जाएगी, 'सेमी स्पीड', 'हाई स्पीड' तथा 'वन्दे भारत' जैसी अत्याधुनिक गाड़ियां एवं अंडर वाटर मेट्रो चलाने में कामयाब हो जाएगी तथा बुलेट ट्रेन चलाने के सपने को पूरा करने के लिए उड़ान भरने लगेगी। इतना ही नहीं, आज रेलवे देश के अर्थतंत्र का सबसे मजबूत आधार भी बन चुकी है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान रेलवे द्वारा पूरे भारत में प्रतिदिन 13,000 से अधिक ट्रेनें चलाई गईं, रिकॉर्ड 1591 मीट्रिक टन माल ढुलाई की गई तथा 648 करोड़ यात्रियों के द्वारा यातायात किये गए और इन सबसे लगभग 2.56 लाख करोड़ रुपये अर्जित हुए। इसलिए इसे भारत की जीवन रेखा भी कही जाती है।

अपनी स्थापना से कदम बढ़ाते - बढ़ाते रेलवे ने विकास की जो रफ़्तार पकड़ी है उसके पीछे रेलवे के सामूहिक प्रयास की भावना और 'दिल मांगे मोर' की शैली की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। रेलवे पहले योजनाएं बनाती है, योजनाओं को लागू करने के लिए तिमाही, छमाही एवं वार्षिक आधार पर लक्ष्य निर्धारित करती है और उसकी प्राप्ति के बाद तत्काल उससे कठिन लक्ष्य निर्धारित कर पुनः उसे प्राप्त करने के लिए जी जान से जुट जाती है। इसी कार्यशैली के आधार पर रेलवे द्वारा देश के अनेक स्टेशनों को एयरपोर्ट जैसी आधुनिक सर्वसुविधायुक्त वर्ल्ड क्लास स्टेशन बनाने तथा 1000 से अधिक छोटे और महत्वपूर्ण स्टेशनों का आधुनिकीकरण करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा फरवरी 2023 में **'अमृत भारत स्टेशन योजना'** प्रारंभ की गई है।

इस योजना के अंतर्गत दीर्घकालिक मास्टर प्लान तैयार कर रेलवे स्टेशनों के विकास की परिकल्पना की गई है जिसके तहत स्टेशनों पर उत्कृष्ट भवन निर्माण किये जाएंगे, अवांछित संरचनाओं को हटाया जाएगा, यात्रियों के लिए प्रकाश की उत्तम सुविधायुक्त कक्ष निर्मित किए जाएंगे, पैदल मार्ग विकसित किए जाएंगे, सड़कों को चौड़ा किया जाएगा तथा आधुनिक पार्किंग सुविधायें प्रदान की जाएंगी। **स्टेशनों को शहर के दोनों किनारों को जोड़ते हुए 'सिटी सेंटर' के रूप में तब्दील किया जायेगा। इनमें रूफ प्लाजा, सुंदर भूदृश्य, इंटर मॉडल कनेक्टिविटी, स्टेशन का बेहतरीन अगला हिस्सा, बच्चों के खेलने के क्षेत्र, कियोस्क, फूड कोर्ट आदि जैसी आधुनिक यात्री सुविधाएं होंगी। इन्हें पर्यावरण अनुकूल और दिव्यांग अनुकूल बनाये जाएंगे।** इसके अलावा नागरिकों को स्थानीय कला और संस्कृति से अवगत करने के लिए **स्टेशन भवनों को स्थानीय संस्कृति, विरासत और वास्तुकला के अनुरूप डिज़ाइन किया जायेगा।**

इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए 26 फरवरी 2024 को देशभर के विभिन्न स्टेशनों पर आमजन की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करकमलों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 41,000 करोड़ रुपये से अधिक लागत के भारतवर्ष के कुल 554 स्टेशनों का शिलान्यास किया गया तथा 1585 रोड ओवर ब्रिज तथा अंडरपास की आधारशिला रखी गई एवं राष्ट्र को समर्पित किया गया। यह रेलवे के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय है। इस योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य के भी 21 स्टेशन एवं 83 आरओबी एवं अंडरपास तथा लगभग 2900 करोड़ की लागत से बनने वाले दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अमृत भारत स्टेशन एवं आरओबी/आरयूबी सम्मिलित हैं। कार्यक्रम के दौरान रायपुर मंडल के सरोना, भाटापारा, भिलाईनगर, हथबंध, बिल्हा, दल्लीराजहरा, भानुप्रतापपुर, निपनिया, मंदिरहसौद एवं भिलाई 10 अमृत स्टेशनों तथा 32 आरओबी एवं अंडरपास के पुनर्विकास कार्यों का शिलान्यास तथा 07 आरयूबी को भी माननीय प्रधानमंत्री जी के कर कमलों से राष्ट्र को समर्पित किया गया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने रेलवे परियोजनाओं के लिए लोगों को बधाई दी और कहा कि देश के समग्र विकास के लिए रेलवे का विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारत की महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से एक निश्चित समय सीमा में कार्य को पूरा करने की आवश्यकता है। आज का कार्यक्रम हमारी इसी नई कार्य संस्कृति का प्रमाण है।

रायपुर मंडल में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन रायपुर स्टेशन पर किया गया जिसमें महामहिम राज्यपाल, छत्तीसगढ़, श्री विश्वभूषण हरिचंदन, उप मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़, श्री विजय शर्मा, सांसद, रायपुर, श्री सुनील कुमार सोनी, विधायक, रायपुर (उत्तर), श्री पुरंदर मिश्रा, तत्कालीन महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, श्री आलोक कुमार एवं मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर मंडल श्री संजीव कुमार विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी की गई तथा अमृत भारत योजना से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महामहिम राज्यपाल, छत्तीसगढ़, श्री विश्वभूषण हरिचंदन द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मंडल के अधिकारी, कर्मचारी, विभिन्न यात्रीगण, प्रबुद्ध नागरिक, बच्चे एवं मीडिया के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

" एक स्टेशन एक उत्पाद " - एक नई पहल

कोरोना महामारी के दौरान जन कल्याण के लिए रेलवे के द्वारा किये गए कार्यों को कौन भूल सकता है ? बाढ़, भूकंप, महामारी, आदि अनेक विपदाओं के समय रेलवे सदैव सामाजिक संस्थाओं की तरह योगदान करती रही है। रेलवे केवल यातायात के सस्ता, सुलभ एवं सुगम साधन ही नहीं है, अपितु रेलवे स्टेशनों के आस- पास के परिक्षेत्र एवं विभिन्न रेल कार्यालय देश के लाखों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार रेलवे केवल अर्थोपार्जन ही नहीं करती बल्कि देश के सर्वांगीण विकास में भी अग्रणी भूमिका निभाती है। अपनी इसी सोच और कार्य संस्कृति के आधार पर रेल मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के **'वोकल फॉर लोकल'** विजन को बढ़ावा देने, स्थानीय व स्वदेशी उत्पाद के लिए एक मार्केट प्रदान करने और समाज के वंचितों वर्गो के लिए अतिरिक्त आय के अवसर जुटाने के उद्देश्य से **'वन स्टेशन वन प्रोडक्ट'** (OSOP) नामक एक अनोखी एवं अनूठी पहल शुरू की गयी है।

प्रत्येक राज्य और प्रत्येक स्टेशन क्षेत्र की कुछ न कुछ खास स्थानीय विशेषताएं होती हैं, वहां के नागरिकों में खास तरह के हुनर होते हैं और वे विभिन्न प्रकार की कलाओं में निपुण होते हैं। परंतु इन्हें किसी प्रकार की कोई पहचान नहीं मिल पाती है और वे अपनी एवं अपने उत्पाद की पहचान बनाने तथा उससे जीविकोपार्जन के लिए संघर्ष करते रहते हैं। ऐसे कारीगरों, शिल्पकारों, कुम्हारों, बुनकरों, हथकरघा बुनकरों, आदि को कौशल विकास के माध्यम से आजीविका बढ़ाने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय बजट 2022-23 में **'एक स्टेशन एक उत्पाद'(OSOP)** योजना की घोषणा की गयी। इस योजना के तहत रेलवे द्वारा देशभर के स्टेशनों पर निविदा प्रक्रिया के माध्यम से उनके लिए बिक्री केंद्र प्रदान किया जा रहा है ताकि उनके द्वारा निर्मित कलाकृतियों, हस्तशिल्पों, कपड़ों, खिलौने चमड़े के उत्पादों, पारंपरिक उपकरणों, परिधानों, रत्न व आभूषणों और स्थानीय रूप से तैयार किये गए प्रसंस्कृत और अर्ध-प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की बिक्री के लिए उन्हें उपयुक्त स्थान प्राप्त हो सके।

इस योजना को पायलट प्रोजेक्ट के तहत 25 मार्च 2022 को 19 स्टेशनों पर 15 दिनों के लिए लॉन्च किया गया था। क्रमशः देश के 21 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में 700 से अधिक रेलवे स्टेशनों पर इसके आउटलेट खोले गए। 12 मार्च 2024 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देशभर की रु. 85,000 करोड़ से अधिक राशि की विभिन्न रेल परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया गया जिसमें रायपुर मंडल के भिलाई मेमू शेड के विस्तार, दुर्ग कोचिंग डिपो में कोचिंग पिट लाइन के उन्नयन का कार्य भी शामिल हैं।

इसके अलावा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की 70 दूरगामी परियोजनाओं के साथ - साथ **'एक स्टेशन एक उत्पाद'** योजना के तहत दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 46 स्टेशनों पर लगाए गए लगभग 50 स्टॉल भी शामिल हैं। उक्त कार्यक्रम के दौरान रायपुर रेल मंडल के 16 स्टेशनों यथा – बिल्हा, भाटापारा, तिल्दा-नेवरा, हथबंद, मांढर, उरकुरा, रायपुर, सरोना, भिलाई, दुर्ग, मरौदा, दल्लीराजहरा, पर भी बालोद, गुंडरदेही, मंदिरहसौद तथा भानुप्रतापपुर पर भी माननीय प्रधानमंत्री जी के कर कमलों से **'एक स्टेशन एक उत्पाद'** स्टॉल का उद्घाटन किया गया जहाँ स्थानीय स्तर पर निर्मित एवं प्रसिद्ध वस्तुओं की बिक्री प्रारंभ कर दी गई है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि आज रेलवे में **'वोकल फॉर लोकल'** तथा **'मेड इन इंडिया'** के इको-सिस्टम का विकास तेजी से हो रहा है। आज मेड इन इंडिया लोकोमोटिव और कोचों को श्रीलंका, मोजाम्बिक, सेनेगल, म्यांमार और सूडान जैसे देशों में निर्यात किया जा रहा है। यह सिलसिला आगे भी चलता रहेगा ताकि नए निवेश से रोजगार के नए अवसर पैदा हो सके और उसका लाभ आम जनता को मिल सके।

इस अवसर पर रायपुर स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचन्दन, मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, श्री टंक राम वर्मा, केबिनेट मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, श्री पुरंदर मिश्रा, विधायक, रायपुर (उत्तर), श्री मोती लाल साहू, विधायक, रायपुर ग्रामीण, श्री विजय कुमार साहू, अपर महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे एवं श्री संजीव कुमार, मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर विशेष रूप से उपस्थित थे।

रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार योजना

विवरण : रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार योजना रेलवे बोर्ड की पुरस्कार योजना है। इसके अंतर्गत हिंदी में लिखा हुआ मौलिक रेल यात्रा वृत्तांत 02 प्रतियों में रेलवे बोर्ड को प्रेषित किया जाना है।

पुरस्कार की राशि : प्रथम पुरस्कार (एक) 10,000/- रु. , द्वितीय पुरस्कार (एक) : 8,000/- रु., तृतीय पुरस्कार (एक) : 6,000/- रु., प्रेरणा पुरस्कार (पांच) : 4,000/- रु. प्रत्येक

पात्रता : कोई भी भारतीय नागरिक इस प्रतियोगिता में भाग ले सकता है।

दिशानिर्देश : रेल यात्रा वृत्तांत न्यूनतम 3000 शब्दों और अधिकतम 3500 शब्दों तक होना चाहिए और डबल स्पेस में टाइप किया हुआ होना चाहिए, जिसके चारों तरफ कम से कम एक इंच का हाशिया होना चाहिए। पृष्ठ क्रमानुसार अंकित होने चाहिएं। वृत्तांत के पहले पृष्ठ के ऊपर एक अलग पन्ना लगाया जाए, जिस पर बड़े अक्षरों में निम्नलिखित विवरण दिया जाए :-

1. शीर्षक : रेल यात्रा वृत्तांत - 2024
2. उपशीर्षक : लेखक द्वारा दिया गया शीर्षक
3. नाम :
4. पदनाम :
5. आयु :
6. पता : कार्यालय
   : निवास
7. मातृभाषा :
8. रेलवे फोन नं :
9. मोबाइल नं :
10. ई-मेल :
11. वृत्तांत के शब्दों की संख्या :

अंतिम तिथि – 31.07.2024

प्रविष्टियां भेजने का पता - सहायक निदेशक, हिंदी (प्रशिक्षण) शाखा, कमरा नं. 36, कॉफमो रेल कार्यालय परिसर, तिलक ब्रिज, आईटीओ, नई दिल्ली - 0002 (टेलीफोन नं 011-47845085)

50 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र

यह हम सभी के लिए हर्ष और गौरव का विषय है कि भारतीय रेलवे के चरोदा स्थित सबसे बड़े सौर ऊर्जा संयंत्र के उद्घाटन के अवसर पर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 50 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र को **'विकसित भारत - विकसित छत्तीसगढ़'** के तहत वर्चुअल रूप से समर्पित किया गया।

इस अवसर पर सुश्री सरोज पांडेय, सांसद राज्यसभा, श्री आलोक कुमार, तत्कालीन महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर, श्री संजीव कुमार मंडल रेल प्रबंधक, रायपुर, श्री सत्यनारायण राठौर संभागायुक्त, दुर्ग, सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी, कलेक्टर दुर्ग, श्री रामगोपाल गर्ग, पुलिस महानिरीक्षक, दुर्ग और श्री जितेन्द्र शुक्ला, पुलिस अधीक्षक, दुर्ग प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का यह सौर ऊर्जा संयंत्र सर्वाधिक उत्पादन क्षमता वाला संयंत्र है जो 192 एकड़ में स्थापित है। इसकी AC उत्पादन क्षमता 50 मेगवाट एवं DC उत्पादन क्षमता 70 MWp है I इस संयंत्र में कुल 153002 सौर ऊर्जा सोलर पैनल लगे हैं I सौर ऊर्जा पावर प्लांट से 1500 डीसी वोल्ट सोलर इन्वर्टर द्वारा 660 AC वोल्टेज में बदले जाते हैं। इसके बाद 660 AC वोल्ट 33 हज़ार AC वोल्ट में इन्वर्टर ड्यूटी ट्रांसफार्मर द्वारा स्टेप अप किया जाता है I 33 हज़ार AC वोल्ट बिज़ली 4.8 किलोमीटर लम्बी ट्रांसमिशन लाइन द्वारा पूलिंग सब-स्टेशन ले जाई जाती है। तत्पश्चात 33 हज़ार AC वोल्ट बिज़ली 220 हज़ार AC वोल्ट में स्टेप अप 50MVA ट्रांसफार्मर द्वारा की जाती है I इस पूलिंग सब-स्टेशन में गैस इंसुलेटेड सब-स्टेशन सिस्टम(300 मेगावाट क्षमता) का उपयोग किया गया है I तत्पश्चात 220 हज़ार AC वोल्ट विद्युत ऊर्जा पावर ग्रिड कुम्हारी के सब-स्टेशन में इंजेक्ट की जाती है, जिसके द्वारा इसे भारतीय रेलवे के दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं उत्तर मध्य रेलवे को ट्रांसमिट की जाती है I

इस परियोजना के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा 27 वर्षों के लिए REMCL को लीज़ पर प्रदान की गयी भूमि पर संयंत्र का निर्माण किया गया है I केंद्रीय ट्रांसमिशन यूटिलिटी द्वारा 50 मेगावाट का ओपन एक्सेस प्रदान किया गया एवं नियमों के अंतर्गत ट्रांसमिशन चार्जेस में छूट भी प्रदान की गयी I पश्चिम क्षेत्रीय पावर निगम (WRPC), मुंबई द्वारा सभी नियमों के पालन के अनुसार सोलर पावर प्लांट को सौर ऊर्जा भिलाई से कर्नाटक एवं उत्तर प्रदेश में भारतीय रेलवे के दक्षिण पश्चिम रेलवे एवं उत्तर मध्य रेलवे को विद्युत् ट्रांसमिशन की अनुमति प्रदान की गयी I

2021 संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में, माननीय प्रधानमंत्री ने **'वैश्विक जलवायु परिवर्तन एक्शन'** में सकारात्मक सुधार हेतु व्यक्तिगत व्यवहार को अग्रणी रखने के लिए **'मिशन लाइफ'** की घोषणा की। इसके अंतर्गत निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं -

1. वर्ष 2005 के स्तर से वर्ष 2030 तक उत्सर्जन तीव्रता में 45% की कमी करना।
2. स्थापित विद्युत क्षमता में गैर जीवाश्म ईंधन की हिस्सेदारी 50% तक कम करना।
3. वन रोपण के माध्यम से तीन अरब टन अतिरिक्त कार्बन सिंक का निर्माण।

ये राष्ट्रीय निर्धारित योगदान (एनडीसी) हैं, जिसके अंतर्गत पेरिस समझौते के अनुसार जलवायु परिवर्तन के खतरे के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करने हेतु भारत के योगदान को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दे रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप 2030 तक अकेले भारतीय रेलवे द्वारा सालाना 60 मिलियन टन उत्सर्जन में कमी आएगी। अंतिम लक्ष्य 2070 तक नेट जीरो कार्बन प्राप्त करना है।

माननीय प्रधानमंत्री जी की दूरदर्शिता एवं कुशल मार्गदर्शन में भारतीय रेल के नेट जीरो उत्सर्जन की लक्ष्य प्राप्ति हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे लगभग 280 करोड़ की लागत से सार्वजनिक निजी भागीदारी द्वारा भूमि आधारित 50 मेगावाट सौर ऊर्जा पावर प्लांट लगाकर उत्पादित सौर ऊर्जा से लगभग 86000 टन कार्बन डाई ऑक्साइड के उत्सर्जन में कमी लाएगी और इसके साथ ही भारतीय रेलवे को लगभग 20 करोड़ रुपए की सालाना बचत भी होगी।

यह भारतीय रेलवे का अद्यतन एवं सर्वाधिक उत्पादन क्षमता वाला सौर ऊर्जा संयंत्र है। इस सौर ऊर्जा संयंत्र को हरित ऊर्जा एवं भारतीय रेलवे के वर्ष 2030 तक वार्षिक 60000 मिलियन टन उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य प्राप्ति की ओर एक सार्थक कदम और उससे भी बढ़कर एक मील के पत्थर के रूप में देखा जाना चाहिए।

- अनुराग तिवारी
वरि. मंडल विद्युत इंजीनियर (परिचालन)
रायपुर

- हिंदी एक अत्यंत शक्तिशाली भाषा है।

- डॉ. कामिल बुल्के

- हिंदी भारत की अमरवाणी है, यह स्वतंत्रता और सम्प्रभुता की गरिमा है।

- राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी

छत्तीसगढ़ के गांधी : पंडित सुंदरलाल शर्मा

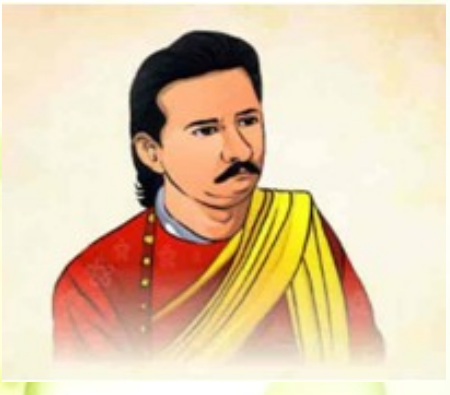

21 दिसंबर 1881 को रायपुर जिले के राजिम के पास एक छोटे से गांव चामशुर में जन्मे पंडित सुंदरलाल शर्मा एक सामाजिक कार्यकर्ता, इतिहासकार, स्वतंत्रता सेनानी, जन-जागरण और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत सहित बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। यदि यह कहा जाए कि इनका पूरा जीवन समाज और जनकल्याण के लिए समर्पित रहा है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी । पंडित सुंदरलाल की शिक्षा स्थानीय स्कूल में हुई थी, परंतु वे बहुत अधिक समय तक स्कूल में पढ़ नहीं सके थे। इसके बाद उन्होंने स्वाध्याय से हिंदी, संस्कृत, मराठी, बांग्ला, उड़िया, छत्तीसगढ़ी आदि कई भाषाएं सीखीं तथा नाट्यकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला में निपुणता प्राप्त की।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में जो स्थान बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और कालांतर में महात्मा गांधी का रहा है वही स्थान छत्तीसगढ़ में आजादी का अलख जगाने और समाज सुधार के क्षेत्र में पं. सुन्दरलाल शर्मा का रहा है। एक तरफ जहाँ इन्होंने ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेने के लिए अपने जन्म स्थान पर ही स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री हेतु **'समित्र मंडल'** की स्थापना की, छत्तीसगढ़ में राजनीतिक और सामाजिक चेतना लाने के लिए 1918 में धमतरी में राजनीतिक परिषद की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान किया, 1919 में जिला स्तरीय सम्मेलन का आयोजन करवाया तथा सन 1921 में महात्मा गांधी को प्रथम बार रायपुर (छत्तीसगढ़) लेकर आए, तो दूसरी तरफ राजाराम मोहन राय के पग-चिह्नों पर चलकर छत्तीसगढ़ में अछूतों के कल्याण के लिए सफल आंदोलन का नेतृत्व किया। इन्हीं के नेतृत्व में 1917-1918 में राजिम में अछूतों के लिए मन्दिर प्रवेश को लेकर आंदोलन प्रारंभ हुआ जो 1925 आते-आते पूर्णतया सफल रहा। इसके बाद जब 1933 में महात्मा गांधी अछूतोद्धार कार्यक्रम के तहत रायपुर आए थे तब उन्होंने पं. सुन्दरलाल शर्मा से कहा था कि "इस मामले में तो आप मेरे से वरिष्ठ हैं और आप मेरे बड़े भाई की तरह है।" इसके बाद से ही उन्हें **'छत्तीसगढ़ का गांधी'** कहा जाने लगा।

'छत्तीसगढ़ के गांधी' होने के कारण ही वे महात्मा गांधी की तरह ही सत्याग्रह एवं अहिंसा में विश्वास करते थे। सत्याग्रह एवं अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा किसानों के ऊपर लगाये गए सिंचाई कर के खिलाफ 1929 में धमतरी तहसील के कंडेल नामक गांव में **'नहर सत्याग्रह'** चलाये जिसके परिणामस्वरुप अंग्रेज सरकार को अपनी दमनकारी नीति वापस लेनी पड़ी। इसे छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा सत्याग्रह माना जाता है। इसी प्रकार, बंगभंग आंदोलन, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे आंदोलनों के दौरान वे जेल भी गए। उन्हीं के कुशल नेतृत्व में रायपुर में सतनामी आश्रम, राजिम में ब्रह्मचर्य आश्रम और धमतरी में एक अनाथालय की स्थापना की गई जिससे छत्तीसगढ़ की जनता को काफी लाभ हुआ। वे आजीवन गांधीवादी रहे, जीवन में उनका आदर्श वाक्य था **"जीवन या मृत्यु में सत्य से दूर न जाएं"**। उनके इन्हीं योगदान की वजह से सरकार द्वारा उनके सम्मान में उनके नाम पर एक डाक टिकट जारी किया गया है और एक विश्वविद्यालय का नामकरण भी किया गया है।

पं. सुंदरलाल शर्मा गांधीवादी सिद्धांतों के प्रखर अनुयायी, समाज सुधार के प्रबल समर्थक, कठोर सत्याग्रही तथा छत्तीसगढ़ की राष्ट्रीय चेतना के पितामह होने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ी बोली एवं हिंदी साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान भी माने जाते हैं।

वे छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी भाषा को समान महत्व देते थे। उनके द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने तथा आजादी के लिए समाज को एक साथ लाने हेतु अनेक कविताएं एवं कहानियां लिखी गयीं और कई पत्र-पत्रिकाओं में भी काम किये गए जिनसे प्रभावित होकर समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग आजादी की लड़ाई में उनके अनुयायी हो गये। उन्होंने अपने जीवनकाल में कुल 18 ग्रंथ लिखे जिनमें 4 नाटक, 2 उपन्यास और शेष काव्य रचनाएं हैं जिनमें उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति **'छत्तीसगढ़ी दान-लीला'** है। इसके अतिरिक्त **'करुणा पचीसी', 'सतनामी भजन माला', 'सच्चा सरदार (उपन्यास)', 'श्री कृष्ण जन्म आख्यान (उपन्यास)', 'सीता परिणय (नाटक)', 'पार्वती परिणय (नाटक)','प्रहलाद चरित्र (नाटक)' तथा 'विक्रम शशिकला (नाटक)'** भी उनकी उल्लेखनीय कृति हैं।

शायद देश की आजादी उनके भाग्य में नहीं लिखी थी। कमजोर होते शरीर के कारण 28 दिसंबर 1940 को वे इस दुनिया को सदा के लिए छोड़कर चले गए। परंतु दुनिया को अलविदा कहने से पहले उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति देशवासियों की सेवा के लिए दान कर दी थी। ऐसे संत महापुरूष के लिए न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा।

- **निकेश कुमार पाण्डेय**
राजभाषा अधिकारी, रायपुर

उपयोगी वाक्य एवं वाक्यांश

As amended - यथा संशोधित।

As proposed - यथा प्रस्तावित।

All concerned should note. - सर्वसंबंधित नोट करें।

Case is to be reviewed. - मामले की पुनरीक्षा की जानी है।

Copy enclosed for ready reference. - संदर्भ हेतु प्रतिलिपि संलग्न है।

Due to unavoidable circumstances. - अपरिहार्य परिस्थिति के कारण।

Explanation may be called for - स्पष्टीकरण माँगा जाए।

Issue reminder urgently - तुरंत अनुस्मारक भेजें।

Matter is under consideration. - मामला विचाराधीन है।

Oath of allegiance - निष्ठा की शपथ।

Please put up with relevant file. - कृपया संबंधित फाइल के साथ प्रस्तुत करें।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

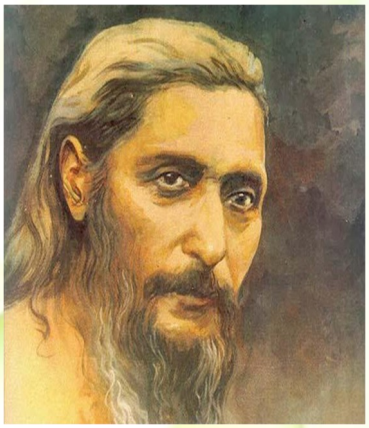

'महाप्राण' ! " वीणा वादिनी " के लाड़ले पुत्र, छायावाद के 'शिव', मुक्त छंद के प्रणेता, सूर्यकांत त्रिपाठी (1896, कहीं – कहीं 1899 -1961) ! पिताजी नौकरी के सिलसिले में बंगाल आ बसे, जन्म बंगाल में हुआ, मां सरस्वती की उपासना अर्थात् बसंत पंचमी के दिन, सो हिंदी का कवि बचपन में बांग्ला बोलता । अल्पायु में मां चल बसी, यहीं से उनके जीवन में दुख स्थायी तत्व बन गया जो आजीवन रहा, "दुख ही जीवन की कथा रही" । निराला इन्हीं परिस्थितियों में आकार लेते हैं ।

स्वभाव से 'कबीर', निराला जब तीन वर्ष के थे तब मां चल बसीं, पन्द्रह वर्ष के हुए तो विवाह मनोहरा देवी से हो गया, उन्हीं के जोर देने पर हिन्दी सीखी । प्रथम विश्व युद्ध के खत्म होते-होते पूरी दुनिया के साथ-साथ तत्कालीन बंबई में जून 1918 में एक महामारी फैल गई, वास्तव में यह स्पैनिश फ्लू था जिसे तब 'बॉम्बे फीवर' कहा गया, हालात बहुत कुछ कोविड जैसे । इसके कारण निराला के बहुत से सगे-संबंधी दुनिया से चले गए, पत्नी ने भी मायके में दम तोड़ दिया, 22 वर्ष के निराला विधुर हो गए । जीवन में शेष बची उनकी पुत्री । निराला ने 'कुल्ली भाट' में इन घटनाओं का वर्णन किया है । कुछ समय बाद पुत्री 'सरोज' जो कि विधवा थी, की भी मृत्यु हो गई । घोर आर्थिक संकटों से जूझते निराला के जीवन का अधिकांश हिस्सा इसके बाद इलाहाबाद में बीता ।

निराला की रचनाओं में प्रेम की सघनता, छायावादी दार्शनिकता, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम आदि देखे जा सकते हैं लिहाजा निराला में कहीं भी मोनोटोनी नहीं दिखाई देती । 1921 में लिखी गई "विजन-वन-वल्लरी पर, सोती थी सुहाग भरी' जैसी पंक्तियों वाली 'जूही की कली' पहली रचना मानी जाती है, इसके बाद 'लिली', 'सुकुल की बीबी', 'अप्सरा', 'गीतिका', 'अनामिका' आदि । कविता में महाप्राण वर्णों के प्रयोग के कारण गंगाप्रसाद पाण्डेय ने 'महाप्राण' कहा और यही नाम चल निकला । अपने स्वभाव के अनुरूप निराला कभी भी बंधकर नहीं लिख पाते थे, यही कारण है कि छंदबद्ध से प्रारंभ होकर उनकी कविता 'जूही की कली' तक आते-आते छन्दमुक्त होने लगती है । मुक्ति की उत्कट आकांक्षा उनको सदैव बेचैन करती रही, तभी तो उन्होंने लिखा –

"तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा
पत्थर की, निकलो फिर गंगा-जलधारा
गृह-गृह की पार्वती
पुन: सत्य-सुंदर-शिव को संवारती
उर-उर की बनो आरती
भ्रांतों की निश्चल ध्रुवतारा ।
तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा ।"

निराला की कलम ने हिंदी साहित्य को 'तुलसी दास', 'राम की शक्ति पूजा' एवं 'सरोजस्मृति' जैसी लंबी कविताएं दीं । 'सरोजस्मृति' उनकी पुत्री की मृत्यु पर लिखा गया शोकगीत है जिसे हिंदी का पहला शोकगीत (Elegy, विलापिका, मर्सिया) माना जाता है ।

'सरोजस्मृति' को जॉन मिल्टन, टेनिसन तथा थॉमस ग्रे के "An Elegy Written in a Country Church Yard" जैसे शोकगीतों का हिंदी समकक्ष माना जा सकता है। इसकी कुछ पंक्तियां देखिए –

"मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल
दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।"

'राम की शक्ति पूजा' का प्रकाशन 1936 में हुआ था। यह 312 पंक्तियों की एक लम्बी एवं संश्लिष्ट कविता है जिसका मुख्य कथानक देवी भागवत, शिवमहिम्नस्त्रोत तथा कृतिवास की बांगला रामायण से लिया गया है। यह कविता "रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर, रह गया राम-रावण का अपराजेय समर ..." से प्रारंभ होती है। अंतिम पंक्तियों में कवि ने मां दुर्गा की आराधना में भगवान राम द्वारा अपने नेत्र समर्पित करने की घटना को बड़े अलौकिक ढंग से प्रस्तुत किया है –

"यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयनद्वय,
"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।"

निराला बंगाल से आते हैं जहां शक्ति की उपासना की परंपरा रही है। वे अपने नैराश्य से उबरने शक्ति की उपासना करते हैं और अपनी चेतना को जगाते हैं। यह मूलत: अन्याय के विरूद्ध विजय की कविता है, यह धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष की कविता है, अंधकार से होकर प्रकाश में आने की कविता है। इस कविता में अधर्म का चित्रण एक प्रचंड शक्ति के रूप में हुआ है, जिसके सामने एक बार तो राम का साहस भी कुंठित होने लगता है। वास्तव में यह जीवन के झंझावातों से टूटे हुए कवि के आत्मसंघर्ष की कविता है जिसमें वह शक्ति का आह्वान करता है ताकि पुन: अपने भीतर साहस भर सके और आसन्न चुनौतियों का सामना कर सके। यह आंतरिक द्वंद्व की कविता है जिसे राम के माध्यम से conscience sublimation के प्रयोजन के रूप में प्रस्तुत किया गया है, राम इसलिए क्योंकि राम कथा विश्व की सबसे लोकप्रिय कथा है, जिसका विस्तार किसी न किसी रूप में पूरे विश्व में है, राम भारतीयता की विराट अभिव्यक्ति हैं।

राम की शक्ति पूजा में निराला ने राम को समाज में एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं –

"होगी जय, होगी जय
हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के बदन में हुईं लीन।"

प्रसंगवश, निराला से जुड़ा एक और प्रसंग । जैसा कि ऊपर बता आए हैं कि निराला स्वाभाव से कबीर टाइप के आदमी थे, एकदम फक्कड़, अपना घर फूंक कर दूसरों के घर में उजाला करने वाले । उस जमाने में उन्हें बड़ी धनराशि वाला पुरस्कार प्राप्त हुआ परंतु निराला ने अपनी आर्थिक विपन्नता के बाद भी इस पारितोषिक में मिली रकम दूसरे को दान कर दी । महादेवी वर्मा, जिन्हें वे बहन मानते, ने उनके इस स्वाभाव का वर्णन किया है ।

निराला को प्रकाशकों ने भी खूब ठगा । उन्हें अपनी किताबों की उचित रॉयल्टी तक नहीं मिली । इस ओर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भी टिप्पणी की थी । 1954 में नेहरू ने साहित्य अकादमी के तत्कालीन सचिव को लिखे पत्र में निराला जी की आर्थिक मदद की बात की थी । उसी पत्र में उन्होंने लिखा था कि प्रकाशकों ने निराला की पुस्तकें बेचकर काफी मुनाफा कमाया लेकिन निराला को बहुत कम राशि मिली । तब नेहरू ने इसको प्रकाशकों के लेखक के शोषण का शर्मनाक मसला बताया था । मगर इन सब बातों का कोई लाभ निराला को न मिल सका ।

जयशंकर प्रसाद ने निराला को " हिंदी साहित्य को ईश्वर की देन " कहा था । पुत्री सरोज के असामायिक निधन और साहित्यकारों के एक गुट, विशेषकर बनारसीदास चतुर्वेदी, द्वारा अनवरत आलोचना से निराला अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में मनोविक्षिप्त से हो गये थे और हों भी क्यों ना ? तीन वर्ष की अल्पायु से जिस व्यक्ति पर भाग्य ने इतने प्रहार किए हों, वह भला विक्षिप्त कैसे न हो ?

15 अक्तूबर 1961 को वे इस संसार से अपने दुखों की गठरी लिए सदा-सदा के लिए विदा हो गए । उनकी मृत्यु पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' ने लिखा – " हमारा मत है कि तुलसीदास जी के बाद से अब तक हिंदी काव्य जगत में निराला जी की काव्य प्रतिभा का कोई कवि नहीं हुआ । "

- डॉ. कमल
कनिष्ठ अनुवादक, रायपुर

फागुन और माटी

बिछ गयो रे लाल रंग टेसू के फूल,
गेंदा फूल सज गई माटी में ले कर अंगड़ाई ।

निंबोली चहचहा उठी डालियों में खिली-खिली,
जब सनसनाती बही रे हवा बसंती पुरवाई ।

जब छज्जे पर बिछ गई पलाश की पिछौरी,
नई कोपल, पीले सरसों के फूल खेतों में लहलहाए ।

झूम कर मन में लिए उमंग रंग संग ऋतुराज प्रवाह,
महुआ के फूल उर उर में मधुर दाह ।

ध्वनि सुरीली रे मेरे मन का पपीहा बोले,
खेलने होली बृज बालाएं केसरी रंग घोले ।

फिर खूब भाए दूर-दूर से ढोल नगाड़े की शोर,
जब दुश्मनों को भी गले लगाकर खेले सुहावनी भोर।

बारिश की बूंदों से पत्ता जैसे चमक गया,
फागुन में ही तो धरती पर जर्रा-जर्रा महक गया ।

- जगदीश्वरी पटनायक
लेखा सहायक, रायपुर

अग्निशामक : प्रकार एवं प्रयोग

हवा, पानी और आग मानव जीवन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राकृतिक वरदान हैं जिनका उपयोग हम अपने रोजमर्रा के जीवन में विभिन्न गतिविधियों को पूरा करने के लिए करते हैं। परंतु यदि आग का उपयोग नियंत्रित तरीके से न किया जाए तो यह कुछ ही सेकंड में खतरनाक हो सकती है। इसका सबसे आम उदाहरण जंगल की आग है जो कुछ ही पलों में जंगल के अधिकांश भाग को स्वाहा कर डालती है। इसी प्रकार आग से अक्सर घर, दुकान, बाज़ार, बस अड्डे, रेल आदि को क्षति पहुँचने का खतरा बना रहता है। ऐसी परिस्थिति में हम आम तौर पर आग की निगरानी के लिए अग्निशमन विभाग को बुलाते हैं। अग्निशमन विभाग के अधिकारी आग बुझाने के लिए तीव्रता और परिमाण के आधार पर अग्निशामक यंत्र का उपयोग करते हैं।

अग्निशामक यंत्र एक बाहरी अग्नि सुरक्षा प्रणाली है जो आमतौर पर सूखे या गीले रसायन से भरा होता है जिसका उपयोग अक्सर आपात स्थिति में छोटी आग को बुझाने या नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग नियंत्रण से बाहर होने वाली आग पर काबू करने के लिए नहीं है। अग्निशामक यंत्र में एक हाथ से पकड़े जाने वाला बेलनाकार दबाव पात्र होता है जिसमें एक एजेंट होता है जिसे आग बुझाने के लिए छोड़ा जा सकता है। गैर-बेलनाकार दबाव वाहिकाओं से निर्मित अग्निशामक यंत्र भी मौजूद हैं लेकिन कम प्रचलित हैं।

अग्निशामक यंत्रों को हैंड-हेल्ड और कार्ट-माउंटेड (जिन्हें पहिएदार अग्निशामक भी कहा जाता है) में वर्गीकृत किया गया है। हाथ से पकड़े जाने वाले अग्निशामकों का वजन 0.5 से 14 किलोग्राम तक होता है और इसलिए इन्हें हाथ से ले जाना आसान होता है। गाड़ी पर लगी अग्निशामक इकाइयों का वजन आम तौर पर 23 किलोग्राम से अधिक होता है। इन पहिएदार अग्निशामक का उपयोग मुख्य रूप से औद्योगिक सुविधाओं जैसी जगहों पर किया जाता है।

अग्निशामक यंत्र पांच अलग-अलग प्रकार के होते हैं, जिनमें गीला रसायन, कार्बन डाई ऑक्साइड, सूखा पाउडर, फोम और पानी शामिल हैं। विभिन्न प्रकार के अग्निशामकों की आवश्यकता विभिन्न प्रकार के ईंधन से आने वाली आग के आधार पर पड़ती है।

विभिन्न प्रकार के ईंधनों के कारण लगने वाली विभिन्न प्रकार की आग को विभिन्न वर्गों की आग में वर्गीकृत किया जाता है -

क्लास ए : क्लास ए की आग में कागज, कपड़ा, लकड़ी और अन्य ज्वलनशील ठोस पदार्थों सहित ईंधन सामग्री के कारण लगी आग शामिल होती है।

क्लास बी : क्लास बी की आग में पेंट, तारपीन और पेट्रोल जैसे ज्वलनशील तरल पदार्थों के अलावा कई अन्य चीजों से लगी आग शामिल होती है।

क्लास सी : क्लास सी आग में मीथेन , ब्यूटेन या हाइड्रोजन सहित कई अन्य ज्वलनशील गैसों से लगी आग शामिल होती है।

क्लास डी : क्लास डी की आग में पोटेशियम, एल्युमीनियम या मैग्नीशियम सहित कई अन्य दहनशील धातुओं से लगी आग शामिल होती है।

क्लास एफ : क्लास एफ की आग में खाना पकाने के तेल के कारण होने वाली आग शामिल होती है, जैसे कुकिंग पैन में लगी आग।

बिजली की आग : बिजली की आग बिजली के उपकरणों से जुड़ी आग के प्रकार पर लागू होती है, लेकिन बिजली के उपकरणों को हटाने के बाद, आग का प्रकार बदल जाता है।

अग्निशामक यंत्रों के प्रकार -

फ़ोम अग्निशामक : फोम अग्निशामक श्रेणी बी की आग के लिए उपयोगी अग्निशामक है । हालाँकि, वे पानी आधारित हैं, जिसका अर्थ है कि वे श्रेणी ए की आग बुझाने में भी उपयोगी हैं । इस प्रकार के अग्निशामक के लिए लेबल का रंग क्रीम है। ये अग्निशामक यंत्र लकड़ी, कार्डबोर्ड, कोयला, कपड़ा और कागज जैसे विभिन्न कार्बनिक पदार्थों और पेट्रोल और पेंट सहित ज्वलनशील तरल पदार्थों के कारण होने वाली आग के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं । इस प्रकार के अग्निशामक यंत्र ज्वलनशील धातुओं, रसोई की आग और बिजली के उपकरणों से लगी आग के लिए उपयोगी नहीं हैं ।

जल शमन यंत्र : जल शमन यंत्र फोम बुझाने वाले यंत्र की तरह ही काम करता है । ये क्लास ए की आग के लिए उपयोगी हैं । इस प्रकार के अग्निशामक यंत्र का लेबल रंग चमकीला लाल होता है। जल शमन यंत्रों का उपयोग लकड़ी, कार्डबोर्ड और कागज जैसे विभिन्न कार्बनिक पदार्थों के कारण होने वाली आग के लिए भी किया जाता है । यह भी ज्वलनशील धातुओं, रसोई की आग और बिजली के उपकरणों से लगी आग के लिए उपयोगी नहीं है।

ड्राय पाउडर अग्निशामक : जेनेरिक शुष्क पाउडर अग्निशामक को एबीसी अग्निशामक के रूप में भी जाना जाता है। ये क्लास ए, क्लास बी और क्लास सी की आग के लिए उपयोगी हो सकते हैं । इस प्रकार के अग्निशामक यंत्र के लेबल का रंग नीला होता है। वे सीमित स्थानों में उपयोग के लिए नहीं हैं क्योंकि अग्निशामक यंत्र में सूखा पाउडर सांस के जरिए अंदर जा सकता है। अक्सर, आग लगने के बाद अवशेषों को साफ करना आसान नहीं होता है। ये बिजली के उपकरणों से लगी आग के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं । लकड़ी, कपड़ा और कागज जैसे विभिन्न कार्बनिक पदार्थों और पेट्रोल और पेंट सहित ज्वलनशील तरल पदार्थों से लगने वाली आग के साथ-साथ, 1000 वोल्ट तक के बिजली के उपकरणों से जुड़ी किसी भी आग को इस अग्निशामक यंत्र की सहायता से बुझाया जा सकता है।

गीले रासायनिक अग्निशामक : गीले रासायनिक अग्निशामक का उपयोग खाना पकाने के तेल और वसा की तरह श्रेणी एफ की आग में किया जाता है । ये क्लास ए की आग में भी उपयोगी होते हैं । इस प्रकार के अग्निशामक यंत्र का लेबल रंग पीला होता है ।

कार्बन डाइऑक्साइड अग्निशामक : कार्बन डाइऑक्साइड अग्निशामक उपकरण मुख्य रूप से विद्युत आग के खतरों के लिए उपयोग किए जाते हैं और आमतौर पर डेटा सर्वर रूम में आग बुझाने वाले यंत्र का प्राथमिक प्रकार होते हैं। इससे क्लास बी की आग भी बुझाई जा सकती है । कार्बन डाइऑक्साइड अग्निशामक, आवश्यक ऑक्सीजन को विस्थापित करके आग को बुझा देते हैं। इस प्रकार के अग्निशामक पर एक काला लेबल लगा होता है ।

जल अग्निशामक यंत्रों की कार्यप्रणाली

जैसे ही फायर ब्रिगेड उन क्षेत्रों में पानी का छिड़काव करना शुरू करता है जहां आग लगी थी, पानी आग के तापमान को ठंडा कर देता है। लगातार पानी के छिड़काव से ईंधन का ज्वलन तापमान कम हो जाता है। इसलिए ईंधन अब नहीं जल सकता, इसलिए यह आग को फैलने से रोकता है। इसके अलावा, जल वाष्प ईंधन की सतह पर ऑक्सीजन की आपूर्ति को अवरुद्ध करता है, जिससे ईंधन की सतह पर ऑक्सीजन की आपूर्ति कम हो जाती है ।

अग्निशामकों से संबंधित सावधानियां :

1. अग्निशामकों को उपयुक्त स्थान पर ठीक तरह से रखना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर उपयोग किया जा सके ।
2. अग्निशामकों के सभी मशीनी भागों की भलीभांति जांच की जानी चाहिए ।
3. अग्निशामक आवश्यकतानुसार समुचित लेबलों वाले हों ।
4. नोजल आउटलेट की जांच की जाए ।
5. अग्निशामकों का आवधिक आधार पर जांच कर, जांच की तिथि को दर्ज कर लेना चाहिए ताकि कालातीत होने से पूर्व उसे रीफिल कराया जा सके ।

- साभार

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की तिमाही बैठकों के विहंगम दृश्य

दिनांक 27.12.2023 को आयोजित दिसंबर 2023 तिमाही की बैठक के दौरान राजभाषा कार्यों की समीक्षा करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार

दिनांक 26.03.2024 को आयोजित मार्च 2024 तिमाही की बैठक के दौरान राजभाषा कार्यों की समीक्षा करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार

दिनांक 21.03.2024 को सीबीटी सेंटर, भिलाई में आयोजित हिंदी कार्यशाला

साहित्यकारों की जयंतियां

महादेवी वर्मा (26.03.2024) :

छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार

जयशंकर प्रसाद (30.01.2024):

छायाचित्र पर माल्यार्पण करते हुए अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.) श्री आशीष मिश्रा

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (21.02.2024) :

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जयंती के कुछ प्रमुख दृश्य

चित्र दीर्घा

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 23.11.2023 को मुंबई में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में महामहिम राज्यपाल, महाराष्ट्र श्री रमेश बैस एवं माननीय केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के करकमलों से मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, रायपुर को तृतीय पुरस्कार

दिनांक 12.10.2023 को भारतीय मानक ब्यूरो, रायपुर के सौजन्य से आयोजित नराकास, रायपुर की बैठक के कुछ दृश्य

अध्यक्ष, नराकास , रायपुर श्री संजीव कुमार से प्रथम पुरस्कार के रूप में नराकास शील्ड ग्रहण करते हुए श्री आशीष मिश्र, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.)

नराकास बैठक के पश्चात अनुवाद टूल्स 'कंठस्थ 2.0' पर आयोजित हिंदी कार्यशाला के दृश्य

वृक्ष प्रत्यारोपण

गति शक्ति यूनिट, रायपुर द्वारा विकास के साथ-साथ पर्यावरण रक्षा को भी समान प्राथमिकता दी जा रही है। यद्यपि इस यूनिट का मुख्य उद्देश्य है तीव्र गति से विकास कार्य को पूरा करना, तथापि यह यूनिट प्रकृति की रक्षा करने, मृदा एवं जल संरक्षण करने, बंजर भूमि की सुंदरता बढ़ाने, भूजल स्तर को बढ़ाने, वन्य जीवों और पक्षियों को भोजन और आश्रय उपलब्ध कराने तथा वृक्षों में रहने वाले जानवरों एवं पक्षियों के घरों को बचाने के प्रति भी काफी सजग है। इसी उद्देश्य से वर्ष 2023-24 के दौरान कुल 91 पेड़ बचाए गए और इन्हें अमृत भारत स्टेशन कार्य स्थल, आरयूबी कार्य स्थल और दोहरीकरण कार्य स्थल पर स्थानांतरित किए गए जिसमें सुपेला (एल सी गेट सं. 442) साइट पर स्थित 100 वर्ष पुराना पीपल का पेड़ भी शामिल है।

वृक्ष प्रत्यारोपण के कुछ दृश्य।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार।

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल rbarsecr2006@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें। यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।